समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

लोक कल्याण सेतु

विशेषांक

मासिक समाचार पत्र

● प्रकाशन दिनांक : १५ मई २०१५ ● वर्ष : १८ ● अंक : ११ (निरंतर अंक : २१५)

● भाषा : हिन्दी ● पृष्ठ संख्या : १६+४ (आवरण पृष्ठ सहित)

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

पाँच प्रधानमंत्रियों, कई मुख्यमंत्रियों, राज्यपालों और राष्ट्रपतियों ने जिनके सत्संग और दैवी कार्यों की सराहना की है, ऐसे ७६ वर्षीय संत की लड़खड़ाती तबीयत के बावजूद उनके साथ इतना अन्याय कब तक ?

आवरण पृष्ठ ३ भी देखें

''सारी चीजों को देखने से मुझे लगता है कि आशारामजी बापू के खिलाफ केस बनता ही नहीं है, इनको निर्दोष बरी करना ही पड़ेगा। दंडित होने के बावजूद कइयों को जमानत मिली है तो (निर्दोष) बापूजी को क्यों नहीं ? उनके साथ बहुत बड़ा अन्याय हो रहा है। जाँच की स्थिति में होते हुए भी आशारामजी बापू करीब २१ महीने से जेल में हैं। यह भारत में एक रिकॉर्ड है। जमानत उनका मूलभूत अधिकार बनता है।''

- सुप्रसिद्ध न्यायविद् डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी

पृष्ठ १८ भी पढ़ें

पूज्य बापूजी को कारागार भेजे जाने पर अन्याय का विरोध करते हुए शिवसेना प्रमुख श्री उद्धव ठाकरे ने कहा था : ''पूज्य बापूजी को बेवजह परेशान न किया जाय।''

बापूजी के सत्संग में पधारे श्री उद्धवजी के उद्‌गार : ''बापूजी ! हमें आपके मार्गदर्शन की जरूरत है, वह सतत मिलता रहे। आपने हमारे कंधों पर जो जवाबदारी दी है, उसे हम भली प्रकार निभायें। लोगों की, संस्कृति की अच्छे ढंग से सेवा करें। सत्य का मार्ग कभी न छूटे, ऐसा आशीर्वाद दो।''

राज्यसभा में उठी पूज्य बापूजी की जमानत हेतु आवाज

''हमारे देश में मशरत आलम (राजद्रोही) आसानी से छूट जाता है लेकिन २१ महीने जेल में रहने के बाद भी आशारामजी बापू को बेल नहीं मिलती। उनके ऊपर आरोप साबित नहीं हुआ है। उनका अधिकार है बेल का ! यह देश के कानून, न्याय और अधिकार के खिलाफ है। कानून मंत्रालय को इस मामले को देखना चाहिए।''

- संजय राऊत, शिवसेना सांसद, राज्यसभा

आखिर क्या है सच ?

पढ़ें पृष्ठ ६ व ७

नेपाल के भूकम्प प्रभावित इलाकों में पूज्य बापूजी के निर्देशानुसार जारी हैं राहत-सेवाकार्य

कच्चा राशन, सब्जियाँ, कपड़े, बिस्कुट, नमकीन, पानी की बोतलें, दवाइयाँ, वॉटरप्रूफ तम्बू, बाँस आदि राहत-सामग्री से भरे ट्रकों के साथ सेवाधारियों के दल पहुँचे नेपाल। आपदाग्रस्तों के लिए चलाये जा रहे हैं अन्नक्षेत्र एवं बनाये गये अस्थायी आवास।

भूखों को अन्न-राशन, जरूरतमंदों को जीवनोपयोगी सामग्री, नीरस को प्रभु रस बाँटते गुरु के प्यारे...

निःशुल्क शरबत, छाछ, जल आदि वितरण केन्द्र पहुँचा रहे हैं तपती धूप में राहत

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : २१५
१५ मई २०१५

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र
(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

इस अंक में...

- इस संस्कृति में संगठित रहना विश्वमानव की सेवा है.....४
- इतना भयंकर षड्यंत्र आखिर क्यों ? - श्री पी. दैवमुत्थु.....५
- समत्वयोगी होते हैं संत..... ७
- आखिर क्या है सच ?.....८
- यह है सच्चाई.....१०
- संत की करुणा-कृपा से बदला जीवन.....१२
- भारत में हैं दो दिल्ली, एक नेपाल.....१३
- निष्पक्ष न्याय और मीडिया.....१४
- पूज्य बापूजी के सत्संग से मेरा जीवन बदल गया.....१५
- जमानत कब मिलेगी ? - श्री सुरेश चव्हाणके.....१६
- विश्वभर से आयी प्रतिक्रियाओं में झलक रहा है जनाक्रोश..... १८
- गलत आरोप लगा के बापूजी को प्रताड़ित किया जा रहा है.....१९
- 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' का भाव रखनेवाले संतों के प्रति दुर्भावना क्यों ?....२०
- बापूजी महापुरुष थे, महापुरुष हैं और महापुरुष रहेंगे.....२१
- युवाओं व विद्यार्थियों हेतु विशेष.....२२
- पूज्य बापूजी की स्वास्थ्य की अनुपम युक्तियाँ.....१५
- नेपाल भूकम्प-पीड़ितों के लिए
- पूज्य बापूजी ने भिजवायी राहत-सामग्री.....२५
- यह हमारे संविधान के विपरीत है - डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी २७
- यह सुनियोजित साजिश है.....२८

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : राजेश बी. कारवानी
सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स,कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

◆ विभिन्न टी.वी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ◆

A2Z NEWS
रोज सुबह ७-३० बजे, रात्रि १० बजे

न्यूज़ WORLD
रोज सुबह ७-३० बजे, रात्रि १० बजे

मंगलमय
www.ashram.org पर उपलब्ध

इस संस्कृति में संगठित रहना विश्वमानव की सेवा है

आज विश्व को बमों की जरूरत नहीं है, शोषकों की जरूरत नहीं है, विश्व को अगर जरूरत है तो भारतीय संस्कृति के योग की, ज्ञान की और **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** के भाव की जरूरत है; विश्व में उपद्रव की नहीं, शांति की जरूरत है। भारतीय संस्कृति शांति देने में, ज्ञान देने में, सब कुछ देने में सक्षम है। सभी धर्मों के लिए हमें स्नेह है, धन्यवाद है, प्रेम है लेकिन भारतीय संस्कृति, मेरी मातृभूमि भारत देश ने दुनिया को जो दिया है, उसका वर्णन नहीं हो सकता !

कितनी ही आँधियाँ आयें, हमारी संस्कृति अमर है। हम सत्य के अनुगामी हैं। भारत का भविष्य उज्ज्वल दिख रहा है। वर्तमान समय एक संगमकाल है। जिस प्रकार गंगा की लहर सारी गंदगी को अपने साथ ले जाती है, उसी प्रकार सारी बुराइयाँ हमारी सत्य सनातन संस्कृति के एक आवेग के साथ बह जायेंगी। इस संस्कृति का जतन करना, इस संस्कृति में आपस में संगठित रहना यह मानव-जाति की, विश्वमानव की सेवा है।

धर्मो रक्षति रक्षितः । हिन्दुस्तानी अपनी संस्कृति की सेवा नहीं करेंगे, अपने धर्म की रक्षा हम लोग नहीं करेंगे तो क्या विदेशी आकर हमारी हिन्दू संस्कृति का, भारतीय संस्कृति का रक्षण करेंगे ? वे तो आपकी संस्कृति को तोड़कर, आपको डरा के राज्य करने के स्वप्न देख रहे हैं। क्या आप अब भी सोये रहोगे ? नहीं। आप सावधान रहो, जगो।

किसीके साथ जुल्म होता है, अन्याय होता है या झूठे केस होते हैं तो संगठित होकर उसकी मदद करो। जहाँ भी सुनाई पड़े कि 'ऐसा यहाँ ठीक नहीं हो रहा है' अथवा अपनी अंतरात्मा बोले, परिस्थिति बोले तो आप यथायोग्य उसको सहयोग करो, मदद करो। ये हम सभी हिन्दुस्तानियों का कर्तव्य है।

- श्री सिद्धनाथ अग्रवाल,
सम्पादक, लोक कल्याण सेतु

श्री पी. दैवमुत्थु,
सम्पादक, 'हिन्दू वॉइस' मासिक पत्रिका

इतना भयंकर षड्यंत्र आखिर क्यों ?

बापूजी की प्रेरणा से चल रहे 'युवाधन सुरक्षा अभियान' तथा गुरुकुलों के विद्यार्थियों द्वारा ओजस्वी-तेजस्वी भारत का निर्माण हो रहा है।

पूज्य बापूजी सबको मंत्र-चिकित्सा, ध्यान, प्राणायाम, सादा रहन-सहन, स्वदेशी वस्तुएँ एवं स्वदेशी आयुर्वेदिक चिकित्सा को अपनाने की सीख देते हैं, स्वास्थ्य के लिए हानिकारक 'हैप्पी बर्थ-डे' की जगह भारतीय पद्धति से जन्मदिवस मनाने की प्रेरणा देते हैं। विद्यार्थियों को संयम के मार्ग पर चलाकर चरित्रभ्रष्ट होने से और यौन-रोगों से बचाते हैं। इससे विदेशी कम्पनियों का प्रतिवर्ष कई हजार करोड़ का नुकसान हो रहा है।

* बापूजी के सत्संग से लोगों में भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था

बढ़ने से देशविरोधी तत्त्वों को तकलीफ होती है।

✻ बापूजी धर्मांतरणवालों के लिए भारी रुकावट हैं इसलिए वे लोग सत्ता की सहायता से बापूजी और हिन्दू संतों को हर प्रकार से झूठे इल्जामों में फँसा रहे हैं। बापूजी आदिवासियों व गरीबों में अन्न, वस्त्र, बर्तन, गर्म भोजन के डिब्बे, कम्बल, दवाएँ, तेल आदि जीवनोपयोगी सामग्रियाँ बाँटते रहे हैं। इससे धर्मांतरण करनेवालों का बोरिया-बिस्तर बँध जाता है।

✻ कई बिकाऊ मीडियावाले पैसों के लिए तो कई टीआरपी बढ़ाने के लिए कुछ-का-कुछ दिखाते रहते हैं।

✻ पूज्य बापूजी के सत्संग से लोग महँगी दवाओं और बिनजरूरी ऑपरेशनों से बच रहे हैं, जिससे कई लूटनेवालों की लूट में भारी कमी आती है।

✻ बापूजी की प्रेरणा से चल रहे 'युवाधन सुरक्षा अभियान' तथा गुरुकुलों व बाल संस्कार केन्द्रों के असाधारण प्रतिभासम्पन्न विद्यार्थियों द्वारा ओजस्वी-तेजस्वी भारत का निर्माण हो रहा है।

✻ बापूजी के सत्संग एवं उनकी प्रेरणा से चल रहे 'व्यसनमुक्ति अभियान' से करोड़ों लोगों की शराब, सिगरेट, गुटका आदि व्यसन छूटते हैं। साथ ही लोग अश्लील सामग्रियों से भी बचते हैं। इससे विदेशी कम्पनियों का खरबों रुपये का नुकसान होता है।

इनके अलावा और भी कई कारण हैं जिनसे कभी ईसाई मिशनरियाँ, कभी विदेशी कम्पनियाँ तो कभी कोई और, मीडिया को मोहरा बनाकर हिन्दू संस्कृति व बापूजी जैसे संतों के विरुद्ध षड्यंत्र करते रहते हैं।

इन तिथियों का लाभ लेना न भूलें

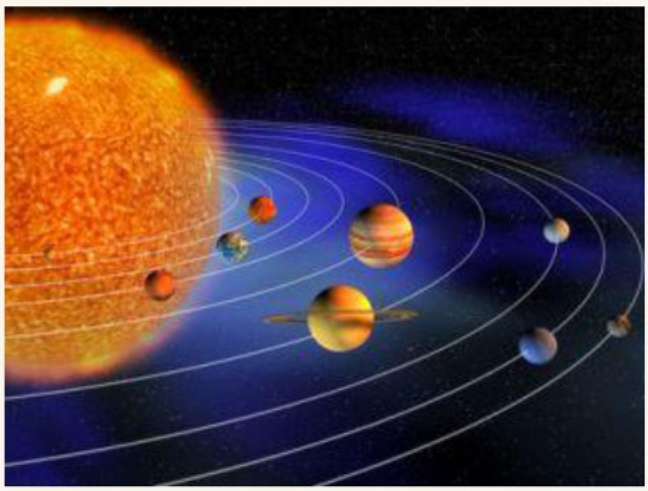

१० जून : बुधवारी अष्टमी (सूर्योदय से सुबह ८-०९ तक)

१२ जून : योगिनी एकादशी (महापापों को शांत कर महान पुण्य प्रदाता व ८८,००० ब्राह्मणों को भोजन कराने के समान फलदायी व्रत।)

१५ जून : षडशीति संक्रांति (पुण्यकाल : शाम ५-१० से सूर्यास्त तक) (जप-ध्यान व पुण्यकर्म का फल ८६,००० गुना। - पद्म पुराण)

१७ जून से १६ जुलाई : अधिक-पुरुषोत्तम मास (माहात्म्य हेतु पढ़ें 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका, मई २०१५, पृष्ठ २०)

२१ जून : दक्षिणायन आरम्भ (पुण्यकाल : सूर्योदय से सूर्यास्त तक), (दक्षिणायन आरम्भ के दिन किये जप-ध्यान व पुण्यकर्म का कोटि-कोटि गुना अधिक व अक्षय फल। - पद्म पुराण)

२४ जून : बुधवारी अष्टमी (सूर्योदय से २५ जून प्रातः ५-४७ तक)

२८ जून : पद्मिनी (कमला) एकादशी (अनेक पापों को नष्ट कर भक्ति व मुक्ति प्रदाता व्रत। समस्त तीर्थों व यज्ञों का फल।)

समत्वयोगी होते हैं संत

नृसिंह सरस्वती जी

संत और सज्जनों के पास धन होता है तो वह समाज के कल्याण में लगता है और दुष्टों व निंदकों के पास धन होता है तो वह भोग में व विनाशकारी कार्यों में लगेगा। ऐसे भी संत हैं जो सदैव समाजसेवा व लोक-मांगल्य के कार्य करते रहते हैं।

गाणक्षापुर (कर्नाटक) में नृसिंह सरस्वती नाम के एक संत रहते थे। संतों की महिमा समझनेवाला वहाँ का राजा राजकीय ठाठ-बाट से उनका मान-सम्मान करता था। पास के कुमसी नामक गाँव में त्रिविक्रम भारती नाम का ब्राह्मण रहता था, जो नृसिंह भगवान का बड़ा भक्त था पर संतों की महिमा से अनभिज्ञ था। वह नित्य नृसिंहावतार की मानस-पूजा करता था लेकिन संत नृसिंह सरस्वती की निंदा में लगा रहता कि 'संन्यासी को पैदल चलना चाहिए और ये तो पालकी पर सवार होकर आता-जाता है। बाजे, सेवक... यह सब संन्यासी को शोभा नहीं देता।'

संत नृसिंह सरस्वतीजी सब जानते थे। एक दिन उन्होंने राजा से कहा : ''मुझे कुमसी गाँव जाना है।'' सेना लेकर राजा गुरु के साथ चला। उस दिन त्रिविक्रम भगवान की मानस-पूजा करने बैठा लेकिन आँखों के सामने भगवान की मूर्ति प्रकट नहीं

(शेष पृष्ठ १५ पर)

श्री अरुण रामतीर्थकर
वरिष्ठ पत्रकार

आखिर क्या है सच ?

जोधपुर केस की हकीकत

'कल्पना' नामक एनजीओ (गैर-सरकारी संगठन) ने बापू के विरुद्ध दायर इस मामले में जो संदिग्ध भूमिका निभायी, उसकी पोल अब खुल चुकी है। बलात्कार मामलों में महिलाओं की पूछताछ के संबंध में अपने को अधिकृत बतानेवाले इस एनजीओ की पोल खोलते हुए 'दिल्ली महिला आयोग' ने एनजीओ के इस दावे को लिखित में नकार दिया है। देश में अनेक फर्जी, झूठे एनजीओज् राष्ट्रविरोधी कार्यों में लिप्त हैं।

लड़की ने एफआईआर में कपोलकल्पित घटना बताते हुए कहा कि जब बापूजी ने उसे कमरे में बुलाया, तब उसकी माँ कमरे के बाहर बैठी हुई थी, पिता भी नजदीक थे। डेढ़ घंटे तक उसके साथ छेड़खानी हुई। वह चिल्लाने लगी तो उसका मुँह दबाकर बंद कर दिया गया। लड़की आगे कहती है कि डेढ़ घंटे बाद वह कमरे से बाहर आयी तो घबरायी हुई थी। माँ के साथ कुटिया के कम्पाउंड के बाहर ही जो किसान साधक का घर है, उसमें चली गयी। उसने अपने माता-पिता को कुछ नहीं बताया और सो गयी।

कैसी मनगढ़ंत बातें हैं ! एक लड़की को छिंदवाड़ा से शाहजहाँपुर व वहाँ से जोधपुर (२००० कि.मी.) माँ-बाप के साथ बुलाकर, जिस कमरे के बाहर लड़की की माँ बैठी हो और पास में ही किसान का घर व लड़की का बाप भी हो, उस कमरे में कोई साधारण या नासमझ आदमी भी लड़की का मुँह दबाकर डेढ़ घंटे तक कुचेष्टा करता रहे - ऐसा सम्भव नहीं है। यह केस कोई भी पढ़े तो दो मिनट में पता चल जायेगा कि यह साजिश है, राजनीति है, मनगढ़ंत कहानी है।

जोधपुर के पास स्थित मणई कुटिया का वह कमरा, जहाँ से एक सिक्के के गिरने की आवाज भी कई फीट तक जाती है, उस कमरे के बाहर नजदीक ही बैठी माँ को लड़की के चिल्लाने की आवाज सुनाई क्यों नहीं दी ? अगर कमरा व लाइट भी बंद थी तो ऐसी स्थिति में डेढ़ घंटे वहीं बाहर बैठी माँ ने दरवाजा क्यों नहीं खटखटाया ? डेढ़ घंटे तक जिसका यौन-शोषण हुआ हो, ऐसी लड़की अपनी माँ को बताये बिना कैसे रह सकती है ? फिर सुबह किसान के बच्चों के साथ खेली व खुशी-खुशी २०० रुपये भी दे गयी। डेढ़ घंटे तक अगर उसका मुँह दबाया रहता, वह विरोध करती रहती तो क्या उसके

शरीर पर कहीं भी कोई निशान नहीं होता ?

लड़की का मेडिकल करनेवाली डॉ. शैलजा वर्मा की रिपोर्ट से भी सिद्ध होता है कि दुष्कर्म नहीं हुआ है । उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि ''मेडिकल के दौरान लड़की के शरीर पर कहीं भी रत्तीभर भी खरोंच के निशान नहीं थे और न ही प्रतिरोध के कोई निशान थे ।'' लड़की की सहेली ने इंदौर में मीडिया को बताया : ''लड़की कहती है कि 'मेरे से जैसा बुलवाते हैं, वैसा मैं बोलती हूँ' ।''

''लड़की की सही उम्र सामने लायी जानी चाहिए''

वरिष्ठ पत्रकार श्री अरुण रामतीर्थकर ने कहा कि ''जहाँ लड़की पढ़ती थी उस विद्यालय के दाखिले का आवेदन, रजिस्ट्रेशन फार्म, एफिडेविट, जो लड़की के पिता की शपथ से युक्त है तथा लड़की के बीमा से संबंधित एलआईसी के कागजात में लिखी जन्मतिथि के अनुसार तथाकथित आरोप के अंतर्गत कहे गये दिन वह लड़की बालिग थी । इस तथ्य को मिले एक वर्ष से अधिक समय हो गया है लेकिन अभी तक पॉक्सो एक्ट नहीं हटाया गया है । प्राप्त दस्तावेजों की जाँच करके लड़की की सही उम्र सामने लायी जानी चाहिए।''

(श्री रवीश राय)

निलम दुबे जी
आश्रम प्रवक्ता

यह है सच्चाई...

आरोपों की वास्तविकता

वर्षों से षड्यंत्रकारियों द्वारा झूठे आरोप लगवाकर तथा झूठी खबरें चलवा के पूज्य बापूजी, श्री नारायण साँईं, आश्रम व साधकों को बदनाम करने व झूठे केसों में फँसाने के दुष्प्रयास किये जाते रहे हैं।

कई वर्षों से षड्यंत्रकारियों द्वारा झूठे आरोप लगवाकर तथा झूठी खबरें चलवा के पूज्य बापूजी, श्री नारायण साँईं, आश्रम व साधकों को बदनाम करने व झूठे केसों में फँसाने के दुष्प्रयास किये जाते रहे हैं। पिछले पौने २ सालों में तो इन आरोपों व झूठी कहानियों ने सारी हदें पार कर दी हैं। अनेक मनगढ़ंत कहानियाँ बनाकर मीडिया में चलायी गयीं एवं झूठे आरोपों को खूब बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया व छापा गया परंतु जब उन सबकी पोल खुली और सच्चाई सामने आयी तो प्रायः उन्हें समाज तक नहीं पहुँचाया गया। उनमें से कुछ सच्चाइयों को आपके सामने रख रहे हैं :

✻ महिला आश्रम पर अनर्गल आरोप लगाये

जाने पर 'गुजरात महिला आयोग' ने महिला आश्रम में घंटों तक पूछताछ व जाँच-पड़ताल की और क्लीन चिट दी, जिससे ऐसे सभी आरोपों की पोल खुल गयी।

✻ जब आश्रम में तांत्रिक विधि किये जाने के आरोप लगाये गये, तब सीआईडी ने आश्रम की जाँच करने के बाद गुजरात उच्च न्यायालय में शपथपत्र पेश कर कहा : ''आश्रम में तांत्रिक विधि नहीं होती।'' सर्वोच्च न्यायालय ने भी दिनांक ९-११-१२ को दिये फैसले में इस प्रकार के सभी आरोपों को पूरी तरह खारिज कर दिया।

✻ छिंदवाड़ा गुरुकुल की ११वीं तथा १२वीं की छात्राओं के भागने व खुदकुशी करने की झूठी खबरें चलाये जाने पर पुलिस अधीक्षक, छिंदवाड़ा से RTI (सूचना का अधिकार) के तहत जानकारी माँगी जाने पर उन्होंने स्पष्ट किया कि 'कोई भी छात्रा गुरुकुल छोड़कर नहीं भागी है और आज तक गुरुकुल की किसी भी छात्रा ने खुदकुशी नहीं की है।'

✻ जब मेरठ की एक छात्रा द्वारा आरोप लगाये जाने की खबरें चलायी गयीं, तब उसके पिता श्री शैलेष शुक्ला ने कहा कि बापूजी पर आरोप लगानेवाली शाहजहाँपुर की लड़की के परिवार के लोग उन पर दबाव बना रहे थे कि वे (शैलेष) भी बापूजी के खिलाफ उनका साथ दें। जोधपुर पुलिस का जाँच अधिकारी उन्हें दिन में १०-१० बार फोन करके बापूजी के खिलाफ बयान देने का दबाव बना रहा था। उनके या उनकी पुत्री के साथ बापूजी ने कोई गलत काम नहीं किया है फिर वे क्यों बापूजी पर झूठा आरोप लगायेंगे ?

✻ सूरत की दो सगी बहनों द्वारा आरोप लगवाये गये लेकिन बाद में उन्हींमें से एक महिला ने गांधीनगर (गुज.) कोर्ट में एक अर्जी डालकर षड्यंत्र का पर्दाफाश करते हुए बताया कि उसने पहले बापूजी के खिलाफ जो बयान दिया था, वह डर और भय के कारण दिया था। अब वह दूसरा बयान देकर केस का सत्य उजागर करना चाहती है।

(देखें लिंक : http://goo.gl/vrZCk8, http://goo.gl/N617mU)

✻ जब नारायण साँईं द्वारा आरोप स्वीकार किये जाने की खबरें चलायी गयीं, तब नारायण साँईं ने उन खबरों की पोल खोलते हुए मीडिया के सामने कहा कि ''लड़की के साथ रेप नहीं हुआ है।'' तथा उनके वकील ने भी खबरों का खंडन किया।

✻ सूरत डीसीपी शोभा भूतड़ा को धमकी दिये जाने के मामले में आश्रम को घसीटा गया लेकिन जाँच करने पर पता चला कि धमकी देनेवाले शख्स का आश्रम से कोई भी संबंध नहीं है।

✻ जम्मू आश्रम में बच्चों को दफनाने का आरोप जम्मू पुलिस की जाँच-पड़ताल में निराधार साबित हुआ। षड्यंत्रकारियों द्वारा बच्चों के कंकाल आश्रम में गड़वाने की साजिश रची जा रही थी, जिसका खुलासा स्टिंग ऑपरेशन में हुआ।

संत की करुणा-कृपा से बदला जीवन

श्री देवराहा बाबा

एक व्यक्ति प्रायः साधु-संतों की खिल्ली उड़ाया करता था। वह एक बार अपने एक मित्र के कहने पर श्री देवराहा बाबा के दर्शन करने जा रहा था। एक परिचित ने पूछा : ''कहाँ जा रहे हैं ?'' उसने कुत्सित तरीके से मुँह चढ़ाकर कहा : ''ससुराल !''

साथी भक्त को दुःख हुआ। उसने कहा : ''देखो मित्र ! संत का आश्रम भगवान का घर होता है। तुम्हारा ऐसा उत्तर कदापि उचित नहीं था । तुम इसके लिए क्षमा-याचना करो।''

परंतु उस व्यक्ति पर कोई प्रभाव न पड़ा। आश्रम पहुँचने पर वहाँ के आध्यात्मिक वातावरण के प्रभाव से उस नास्तिक को कुछ सुकून का एहसास होने लगा। देवराहा बाबा आये, भक्तों को दर्शन देने लगे। एक सेवक को आदेश देते हुए उन्होंने कहा : ''यह मेरा कुटुम्बी भक्त है, यह ससुराल आया है। धोती और कुछ रुपये लाओ। मैं इसकी विदाई करूँगा।''

'ससुराल' शब्द सुनते ही वह भौंचक्का रह गया। उसे अपनी बात याद आयी और वह बाबा से क्षमा माँगने लगा।

बाबा बोले : ''देख बच्चा ! कभी किसी भी संत या उनके द्वार की निंदा मत किया कर। वे पृथ्वी के भूषण हैं, मानव-कल्याण हेतु वे जन-सम्पर्क में आकर अपनी तप-साधना का, ईश्वरीय आनंद का प्रसाद बाँटते हैं। जब जीवों पर करुणामय ईश्वर की विशेष कृपा होती है तो ऐसे संतों का सान्निध्य-लाभ होता है।''

जड़ जीवन कौं करै सचेता,
जग महै विचरत हैं एहि हेता।

उस व्यक्ति ने देवराहा बाबा से दीक्षा के लिए आर्त प्रार्थना की। वह बाबा की आज्ञानुसार अपने जीवन को ढालकर सत्पथ का पथिक बन गया।

भारत में हैं दो दिल्ली, एक नेपाल; यह है संसार के नाम-रूप की माया !

एक अखबार में छपी खबर के अनुसार जनगणना विभाग की वेबसाइट से यह जानकारी सामने आयी है कि देशभर में एक ही नाम से कई शहरों और राज्यों के नाम हैं। 'नेपाल' ओड़िशा के नयागढ़ जिले का गाँव है। उत्तर प्रदेश में ३ दुबई हैं। अनेकों गाँवों के नाम देश के कई राज्यों, शहरों और विदेशों के नाम से मेल खाते हैं। दिल्ली देश की राजधानी है लेकिन मध्य प्रदेश के रीवा जिले में एक गाँव भी है। मध्य प्रदेश में ही २ भोपाल हैं।

उत्तर प्रदेश में २ गाँव अहमदाबाद नाम से हैं। राजस्थान में ३ श्रीनगर हैं तथा अलवर में एक चंडीगढ़ है, बाड़मेर में कश्मीर और केरल हैं तथा एक केरल जोधपुर में भी है।

देशभर में ७७ भरतपुर, १५ जोधपुर, ८५ पाली, ७३ कोटा, ७४ उदयपुर, ५९ मणिपुर, १८ केरल, १४ बिहार और ६१ जयपुर नाम से गाँव हैं।

क्या करिये क्या जोड़िये, थोड़े जीवन काज।
छोड़ी-छोड़ी सब जात हैं, देह गेह धन राज॥
हाड़ बढ़ा हरि भजन कर, द्रव्य बढ़ा कछु देय।
अकल बढ़ी आत्मज्ञान पा, जीवन का फल एह

इतने सारे जयपुर, शिमला... 'मेरा गाँव, मेरा नाम...' मेरा आत्मा अमर चैतन्य है, उसको जान लो। ठीक है न !

पूज्य बापूजी के सत्संग से मेरा जीवन बदल गया

पहले मुझमें बहुत-सी बुरी आदतें थीं, जैसे - गालियाँ देना, देर तक सोना, कुसंग करना आदि। पिताजी मुझे पढ़ने भेजते थे पर मैं फिल्म देखने चला जाता था। एक बार मैंने पूज्य बापूजी के सत्संग की सीडी देखी तो मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने सत्संग में बताये अनुसार आचरण करना शुरू किया, मंत्रदीक्षा ली, सुबह जल्दी उठकर जप-ध्यान करने लगा। तब से मेरा जीवन ही बदल गया। पहले मैं पढ़ाई में बहुत कमजोर था और मेरे ३८-३९% अंक आते थे। अब मुझे कक्षा में ९३% अंक मिले हैं। मेरे जीवन को उन्नत करनेवाले गुरुदेव के श्रीचरणों में बारम्बार प्रणाम !

– सौरव कुमार राय, जालंधर (पंजाब)

श्री सुनील अम्बवानी
मुख्य न्यायाधीश,
राजस्थान उच्च न्यायालय

निष्पक्ष न्याय और मीडिया

('मीडिया ट्रायल एंड इट्स इम्पैक्ट)

('मीडिया ट्रायल एंड इट्स इम्पैक्ट ऑन सोसायटी एंड ज्यूडिशियल सिस्टम' विषय पर राजस्थान उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश सुनील अम्बवानी के व्याख्यान के सम्पादित अंश, संदर्भ : राजस्थान पत्रिका)

न्याय-सिद्धांत है कि चाहे हजार दोषी छूट जायें पर एक निर्दोष को सजा नहीं होनी चाहिए। मीडिया कई मामलों में पहले ही सही-गलत की राय बना चुका होता है। इससे न्यायाधीश पर दबाव बन जाता है।

'व्हॉट इज ए फेयर ट्रायल ?' (निष्पक्ष ट्रायल क्या है ?) हर आरोपित को फेयर (निष्पक्ष) ट्रायल का अधिकार है। निष्पक्ष ट्रायल से मतलब है किसी भी अपराध की पुलिस या अन्य किसी एजेंसी जैसे सीबीआई, सीआईडी द्वारा निष्पक्ष जाँच-पड़ताल, आरोप-पत्र बनाने का पारदर्शी और स्वच्छ तरीका, रिपोर्ट में विश्वसनीय और मानने योग्य सबूत, आरोपित का बचाव करने का अधिकार, सबूतों को जानने और क्रॉस एग्जामिन करने का अधिकार, अपना पक्ष रखने का अधिकार। ये सभी निष्पक्ष ट्रायल के मुख्य बिंदु हैं। अगर कोई इन चीजों में दखलंदाजी करता है तो

वह न्याय-प्रक्रिया में दखलंदाजी मानी जाती है। यहाँ न्याय-प्रक्रिया का अर्थ ही स्वतंत्र और निष्पक्ष ट्रायल है।

अगर कोई आरोपी सम्माननीय है तो उसके सम्मान का क्या ? आप जानते हैं कि न्याय-सिद्धांत है कि चाहे हजार दोषी छूट जायें पर एक निर्दोष को सजा नहीं होनी चाहिए। यह भी सिद्धांत है कि संदेह के आधार पर सजा न हो । मीडिया के कारण न्यायाधीश सुपरविजन के प्रभाव में आ जाता है। अगर कोई विश्वसनीय सबूत न हो और वह केस खारिज कर देता है तो मानो फँस गया क्योंकि वह अपने मित्रों और साथियों की नजर में दोषी है। सुनने को मिलता है, 'अरे, तुमने उसको छोड़ दिया !' आप बिना विश्वसनीय, प्रामाणिक और उचित सबूतों के आधार पर किसीको दोषी तो नहीं ठहरा सकते, जो आपके सिद्धांतों में है। जब तक लोगों की मान्यता नहीं बनी है, तब तक वह न्यायाधीश किसीसे नहीं डरता है। लेकिन मीडिया कई मामलों में पहले ही सही-गलत की राय बना चुका होता है। इससे न्यायाधीश पर दबाव बन जाता है कि एक व्यक्ति जो जनता की नजर में दोषी है, उसको अब दोषी ठहराने की जरूरत है। न्यायाधीश भी मानव है। वह भी इनसे प्रभावित होता है।

(संकलक : श्री इन्द्र सिंह राजपूत)

(पृष्ठ ७ का शेष)

हो रही थी। अपने आराध्य के दर्शन न होने से वह बेचैन हो उठा। भगवान को पुकारने के बाद जब उसने दुबारा ध्यान लगाने की कोशिश की तो नृसिंह भगवान के बदले एक संन्यासी दिखायी दिये। खिन्न होकर वह घर के बाहर निकला तो एक बड़ा जुलूस आता दिखा। उसने देखा कि एक पालकी में राजा और दूसरी पालकी में भगवान नृसिंह विराजमान हैं। उसने अपने आराध्य देव को दंडवत् प्रणाम किया और सिर उठाया तो देखा कि भगवान नृसिंह की जगह संत नृसिंह सरस्वती विराजमान हैं। जुलूस के लोग भी उसको नृसिंह सरस्वती के रूप में दिखायी देने लगे। वह चकित हो गया। नृसिंह सरस्वतीजी ने कहा : ''तुम दाम्भिक कहकर हमारी निंदा करते हो। क्या ये ठाठ-बाट मेरे लिए हैं ? मेरे लिए मिट्टी और सोना समान हैं । रहने के लिए मुझे झोंपड़ी या राजमहल दोनों समान हैं। भगवान, संत तो भक्ति के प्यासे होते हैं। ब्रह्मज्ञानी महापुरुष चाहते हैं सब आत्मज्ञान पा लें। उन्हें और क्या चाहिए ?

कुछ नासमझ लोग कहते हैं संतों को धन से क्या लेना-देना ? संत और सज्जनों के पास धन होता है तो वह समाज के कल्याण में लगता है और दुष्टों व निंदकों के पास धन होता है तो वह भोग में व विनाशकारी कार्यों में लगेगा । ऐसे भी संत हैं जो बड़े-बड़े अकाल, बाढ़ व प्राकृतिक आपदाओं-संकटों में लोगों की रक्षा करते हैं, सदैव समाजसेवा व लोक-मांगल्य के कार्य करते रहते हैं । संत तो भक्तों को सेवा देकर उनके कल्याण हेतु उनकी चीज-वस्तुएँ स्वीकारते हैं । यह सब ठाठ-बाट भक्तों का है। यह सब उनकी खुशी व संतोष के लिए है।''

त्रिविक्रम भारती को अपनी नासमझी पर पश्चात्ताप हुआ और वह नृसिंह सरस्वतीजी से क्षमा-याचना करने लगा। संत तो दयालु होते हैं, उन्होंने उसे क्षमा कर दिया।

श्री सुरेश चव्हाणके
अध्यक्ष, सुदर्शन न्यूज चैनल

जमानत कब मिलेगी ?

बापू को जल्द-से-जल्द इंसाफ मिले

– सुदर्शन न्यूज

आखिर २० महीने होने के बावजूद भी आशाराम बापू को जमानत क्यों नहीं मिली ? इस देश में पिछले २० महीने में कितनी ही ऐसी घटनाएँ हुईं, जिनमें लोगों पर आरोप हुए, वे जेल में गये और उसके बाद बाहर आ गये। पौने दो लाख करोड़ रुपये के 2G स्पेक्ट्रम घोटाले के प्रमुख आरोपी से लेकर कई बड़े-बड़े आरोपी जेल के बाहर हैं। उनमें से कुछ लोग चुनाव भी लड़ चुके हैं। ७० हजार करोड़ रुपये के घोटाले का आरोप जिनके ऊपर है या जिन पर कॉमनवेल्थ खेलों के घोटाले का आरोप है, वे भी बाहर हैं। और 'तहलका' का सम्पादक तरुण तेजपाल भी बाहर है लेकिन निर्दोष आशाराम बापू अभी भी अंदर हैं, २० महीने हो गये हैं !

किसीको २० महीने तक बगैर बेल आप कैसे रख सकते हैं ? लोग इसको लेकर जनाक्रोश के रूप में अपनी प्रतिक्रियाएँ दे रहे हैं और कुछ समय पहले 'अखिल भारतीय नारी रक्षा मंच' ने दिल्ली में हजारों की संख्या में एकत्र होकर बड़ा मार्च भी किया था।

हिन्दू संतों के ऊपर हमेशा ही अन्याय होता रहा है। उन्होंने जब बहुत बड़े-बड़े कार्य किये, तब यह नहीं कहा गया कि यह कार्य विश्वशांति के लिए हुआ, समाज-कल्याण के लिए हुआ लेकिन जब कभी उनके ऊपर कोई छोटा-सा आरोप लग जाता है तो उस आरोप की कितनी हवाएँ बनायी जाती हैं !

इस अत्याचार के खिलाफ अगर कोई बोलेगा नहीं तो मीडिया एकतरफा हमला करके अपने मंसूबे में सफल हो जायेगा। हम तो इसके खिलाफ बोलेंगे क्योंकि यह अशोभनीय है, असहनीय है और अब अति हो गयी है।

जो पिछले १२०० सालों में सम्भव नहीं हुआ, वह आनेवाले १० सालों में दिख रहा है। इन १० सालों में **इस देश को गुलाम बनने से**

इस देश को गुलाम बनने से रोकनेवाली जो सबसे बड़ी शक्ति है, वह आशारामजी बापू हैं। इसी कारण ये सबसे ज्यादा निशाने पर हैं। आशाराम बापू हिन्दू धर्म के बड़े संत हैं इसलिए उनको निशाना बनाकर हिन्दू धर्म का पूरी दुनिया में कुप्रचार किया जा रहा है। तमाम साजिशों के बावजूद आशारामजी बापू के भक्तों का भरोसा नहीं डिगा। उनकी नजर में बापू आज भी महागुरु का दर्जा रखते हैं। बुजुर्ग बापू को जल्द-से-जल्द इंसाफ दिलाना जरूरी है।

रोकनेवाली जो सबसे बड़ी शक्ति है, वह आशारामजी बापू हैं। इसी कारण ये सबसे ज्यादा निशाने पर हैं।

मैं दावा कर सकता हूँ कि अगर यह लड़ाई आपने नहीं जीती तो साधु-संतों के बाद सामाजिक कार्यकर्ता, जो स्वदेश और देश-धर्म की बात करता है, उसका नम्बर लगना तय है। आज बापूजी निशाने पर हैं, कल आप और हम हैं।

बापूजी के बाहर आने के बाद यह लड़ाई खत्म हुई, ऐसा नहीं है। अब यह लड़ाई शुरू हो चुकी है और यह लड़ाई तब तक जारी रहनी चाहिए, जब तक इस देश के खिलाफ षड्यंत्र खत्म नहीं होता।

बापू को जल्द-से-जल्द इंसाफ मिले

– सुदर्शन न्यूज

आशाराम बापू हिन्दू धर्म के बड़े संत हैं इसलिए उनको निशाना बनाकर हिन्दू धर्म का पूरी दुनिया में कुप्रचार किया जा रहा है। तमाम साजिशों के बावजूद आशारामजी बापू के भक्तों का भरोसा नहीं डिगा। उनकी नजर में बापू आज भी महागुरु का दर्जा रखते हैं। बापू के खिलाफ साजिश रचनेवालों ने कई मीडिया हाउसों को एक तरह से खरीद लिया है। मीडिया के दबाव में साजिश रचनेवाले लोगों की पूरी तरह पड़ताल नहीं की जा सकी। **मीडिया ट्रायल बंद हो।** बुजुर्ग बापू को जल्द-से-जल्द इंसाफ दिलाना जरूरी है।

विश्वभर से आयी प्रतिक्रियाओं में झलक रहा है जनाक्रोश

जनाक्रोश

''आरोप लगानेवाली लड़की के बालिग होने के कई प्रमाण हैं और इस लड़की ने बापूजी के खिलाफ जो भी बयान दिया है वह सरासर झूठ है, यह सब लोग जानते हैं। हम बीसों साल से बापूजी से जुड़े हैं और हमको पता है कि हमारे बापूजी पूरी तरह निर्दोष हैं। २१ महीने हो गये हैं... अभी तक एक भी आरोप की पुष्टि नहीं हो पायी है तो उन्हें जमानत क्यों नहीं मिल रही है ? बापूजी को जेल में रखकर पूरे विश्व के मानवों का नुकसान किया जा रहा है।''

– श्री संदीप मित्रा, टेक्निकल लीड इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, बोस्टन (यूएसए)

आवेदन

''हमारी सरकार से यही माँग है कि देश में निष्पक्ष न्याय-व्यवस्था हो। इस न्याय-प्रणाली में यह बड़ी हैरानी की बात है कि आरोप सिद्ध होने के बावजूद कुछ लोग खुले घूम रहे हैं पर पिछले २१ महीनों से झूठे केस में फँसाये गये बापूजी को आरोप सिद्ध न होने के बावजूद एवं कष्टदायी बीमारी के बावजूद भी बेल नहीं मिल रही है और उन्हें और भी फँसाने की पूरी साजिश हो रही है। क्या इससे लोगों के मन में न्याय-व्यवस्था में विश्वास उपजेगा ? सरकार से विनती है कि देशहित में सोचते हुए इस पर गम्भीरता से विचार करे और बिकाऊ मीडिया के प्रभाव में न आये।''

– श्री विपिन तिवारी, सीनियर सॉफ्टवेयर इंजीनियर नेशनल ट्रेडिंग डेवलपमेंट, दुबई.

बेल मिलनी ही चाहिए

''क्या बापूजी के लिए ही पॉक्सो बनाया गया है ? उनके साथ इंसाफ क्यों नहीं हो रहा है ? मैं भी एक महिला हूँ और २० साल से बापूजी से जुड़ी हूँ। बापूजी के सत्संग-सान्निध्य से कितना लाभ हुआ - यह मेरा खुद का अनुभव है। मेरे जैसी लाखों महिलाएँ जब कह रही हैं कि बापूजी निर्दोष हैं तो हमारी बात क्यों नहीं सुनी जा रही है ? एक लड़की के पीछे लाखों महिलाएँ दुःखी हैं, यह सरासर अन्याय है। अब तो बापूजी को बेल मिलनी ही चाहिए, नहीं तो लोगों का भारत की न्याय-व्यवस्था से विश्वास ही उठ जायेगा।'' **– श्रीमती जलपा मित्रा, अध्यापिका, बोस्टन (यूएसए)**

आध्यात्मिक पहलू

मैं बापूजी के सम्पर्क में आज से २० साल पहले आया था और उस समय उन्होंने मुझे ब्रह्मचर्य-व्रत की शिक्षा दी। आज मैं २० साल से पत्नी के साथ रहता हूँ पर मेरा ब्रह्मचर्य व्रत भंग नहीं हुआ है।

पुलिसवालों से और जिन्होंने आरोप लगाये हैं उनसे मैं पूछना चाहता हूँ कि कोई गलत काम करने जायेगा तो एक जगह चुनेगा ? क्या गलत काम करने के लिए किसी दूसरे के घर का चयन करेगा ? यह उनको नजर क्यों नहीं आ रहा है ? यह तो पूरी साजिश है !''

– श्री धर्मेन्द्र त्रिपाठी, पीसीएफ ऑफिसर, इलाहाबाद (उ.प्र.)

गलत आरोप लगा के बापूजी को प्रताड़ित किया जा रहा है

श्री श्री १०८ श्री नरेन्द्र गिरि महाराज,
अध्यक्ष, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद

कुछ ऐसी संस्थाएँ हैं जो सनातन धर्म को खत्म करने के लिए चक्रव्यूह रचती रहती हैं। साधु-महात्माओं पर बिना प्रमाण के आरोप लगाकर उनको बदनाम करने का षड्यंत्र करती हैं। संत आशारामजी बापू के खिलाफ भी षड्यंत्र किया गया है। गलत आरोप लगा के उनको प्रताड़ित किया जा रहा है लेकिन उनमें से कोई भी आरोप सिद्ध नहीं हो पाया।

कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी पर हत्या का आरोप लगा तो मीडिया द्वारा बहुत दुष्प्रचार किया गया लेकिन जब वे निर्दोष बरी हुए तो एक पंक्ति भी नहीं दिखायी गयी। तो इस बीच जो उनको प्रताड़ित किया गया, उसका जिम्मेदार कौन होगा ? कल हमारे बापू भी निर्दोष बरी हो के आयेंगे तो इस बीच उनको जो प्रताड़ित किया गया, उसका जिम्मेदार कौन होगा ? समाज को यह सोचना चाहिए कि सनातन धर्मावलम्बियों को, हमारे संत-महात्माओं को कहीं-न-कहीं से षड्यंत्र करके फँसाया जा रहा है। हमें जागृत होना होगा।

'सनातन संस्था' के राष्ट्रीय प्रवक्ता
श्री अभय वर्तकजी

पूज्य बापूजी के ऊपर जो कीचड़ उछाला गया है, जो सरासर झूठे आरोप लगाये गये हैं यह देख के, सुन के हरेक हिन्दू के मन को पीड़ा हुई है।

जो चैनल हमारे पूजनीय बापूजी के ऊपर कीचड़ उछालता है, उस बिके हुए चैनल को पहले घर से निकाल देना चाहिए। हम बिकी हुई पत्रिका भी नहीं पढ़ेंगे।

षडयंत्र के खिलाफ संत-समाज का शंखनाद

'सर्वे भवन्तु सुखिन:' का भाव रखनेवाले संतों के प्रति दुर्भावना क्यों ?

न्याय-सिद्धांत है कि चाहे हजार दोषी छूट जायें पर एक निर्दोष को सजा नहीं होनी चाहिए।

TO NIRDOSH SANTO KO SAJA KYON?

Asharam Bapuji Ko NYAY do!!

संतों की भूमि भारत में ही संतों के साथ अन्याय कब तक होता रहेगा ? शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वतीजी को जो जेल आदि का कष्ट दिया गया, जो बदनामी की गयी, क्या उसकी क्षतिपूर्ति हो सकती है ? ऐसा ही संत आशारामजी के साथ हो रहा है।

भारत के साधु-संत सनातन सत्य के अमृत का पान ही नहीं करते वरन् इसे बाँटते भी हैं। यह क्रम हजारों वर्षों से बना हुआ है। वर्तमान समय में भी 'सबका मंगल, सबका भला' इस भाव से ओतप्रोत रहनेवाले हमारे ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष पूज्य बापूजी मानवमात्र को अपने सत्संग के माध्यम से सनातन सत्य का ज्ञानामृत बाँटते रहे हैं और वैदिक ज्ञान की सनातन धारा की निरंतरता बनाये हुए हैं। पर हर काल में धर्मविरोधी भी धरती पर आते रहे हैं। धर्मविरोधी शक्तियाँ आज भी सक्रिय हैं और धर्म व संस्कृति की सेवा में लगे हमारे साधु-संत इनके निशाने पर हैं। शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी, साध्वी प्रज्ञा सिंह तथा और भी कई साधु-संत इन्हीं शक्तियों के षड्यंत्र के शिकार हुए। किसीको हत्या का आरोपी बताकर सताया गया तो किसीको आतंकवादी कहकर जेल में डाल

बापूजी महापुरुष थे, महापुरुष हैं और महापुरुष रहेंगे

आचार्य श्री कौशिकजी महाराज,
वृंदावन

पूज्य संत आशारामजी बापू के लिए मीडिया में जो कुछ बोला गया, वह मेरे गले नहीं उतरता। मैंने कोई पैसा नहीं ले रखा है यह बात बोलने के लिए। इन महापुरुष की जीवनी पढ़ के देखो, कितने बच्चों के जीवन बदले, युवानों के जीवन बदले ! अरे... शराबी बदल गये, करोड़ों लोगों की जिंदगी बदल गयी बापू के सत्संग से ! मैं पूरी दुनिया में घूमता हूँ, मैंने नजदीक से देखा है। रोना आता है ये सब बातें सुनकर।

किसीके बहकावे में आकर अपने गुरुजनों का दामन मत छोड़ देना। इस समाज के दुष्टों ने महावीर स्वामी, स्वामी दयानंदजी, स्वामी विवेकानंदजी आदि को भी नहीं छोड़ा। पवित्र संतों के ऊपर उँगली उठानेवालो ! एक बार अपनी तरफ जरूर झाँककर देखो कि क्या तुम पवित्र हो ?

टेलिविजन चैनल पर यह नहीं दिखाया जाता कि संतों ने परमार्थ, परोपकार कितना किया है, महापुरुषों द्वारा कितने शराबियों की शराब छूटी, कितने लोगों की जिंदगी बनी।

महापुरुषों का तपा हुआ जीवन देखिये, उन्होंने खुद को कितना तपाया है ! बापूजी महापुरुष थे, महापुरुष हैं और महापुरुष रहेंगे। किसीके बहकाने में आकर अपनी श्रद्धा को कमजोर मत कर देना ! साँच को कभी आँच नहीं आती - यह बिल्कुल पक्की बात है ! ■

दिया गया। अब इनके निशाने पर हैं राष्ट्रीय संत श्री आशारामजी बापू।

एक ऐसे संत जो विगत ५० वर्षों से अपने सत्संग से समाज में अलख जगा रहे हैं। लाखों नहीं, करोड़ों लोगों ने जिनसे दीक्षा लेकर अपने जीवन को सनातन धर्म के ज्ञान से सँवारा है, ऐसे शिव-संत यानी कल्याणकारी संत आज जेल में हैं !

संतों की भूमि भारत में ही संतों के साथ अन्याय कब तक होता रहेगा ? शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वतीजी को जो जेल आदि का कष्ट दिया गया, जो बदनामी की गयी, क्या उसकी क्षतिपूर्ति हो सकती है ? ऐसा ही संत आशारामजी के साथ हो रहा है। उनके विरुद्ध झूठे दुष्प्रचार से अनेक लोगों की आस्था को ठेस पहुँची है, करोड़ों लोगों का हृदय आक्रंद कर रहा है। कल जब वे निर्दोष बाहर आयेंगे तो कौन करेगा इसकी क्षतिपूर्ति ?

हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि पूज्य संत श्री आशारामजी बापू पुनः लाखों लोगों के बीच सजे हुए पंडाल में सनातन सत्य का ज्ञानामृत लुटाते नजर आयें।

- ध्यान मारवीजा,
संयोजक, राष्ट्रोत्थान मंडल, हरिद्वार

युवाओं व विद्यार्थियों हेतु विशेष

ज्ञान मुद्रा

✻ अनिद्रा अथवा अतिनिद्रा, कमजोर याददाश्त, क्रोधी स्वभाव आदि को दूर करने के लिए लोग डॉक्टरों व दवाइयों की गुलामी करने के बाद भी सफल नहीं हो पाते। इन समस्याओं को दूर करने का आसान व बिना खर्च का उपाय है 'ज्ञान मुद्रा'। इससे पूजा-पाठ, ध्यान-भजन में मन लगता है तथा एकाग्रता में भी वृद्धि होती है। (विस्तृत जानकारी हेतु पढ़ें, आश्रम द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'जीवन विकास', पृष्ठ ८४)

✻ जल्दी सोयें, जल्दी उठें। रात्रि ९ बजे से प्रातः ३ या ४ बजे तक की प्रगाढ़ निद्रा से ही आधे रोग ठीक हो जाते हैं। **अर्धरोगहरी निद्रा...**

✻ एकाग्रता के विकास का आसान व कारगर तरीका है 'त्राटक'। आसन पर बैठकर इष्टमूर्ति, सद्गुरुदेव, दीपज्योति आदि को बिना पलक झपकाये एकटक देखते रहें। इससे नेत्रज्योति भी बढ़ती है। दीपज्योति त्राटक नेत्रज्योति बढ़ाने में विशेष लाभदायी है।

✻ जिन विद्यार्थियों (१८ वर्ष से कम उम्र) का कद नहीं बढ़ता, वे पुलअप्स का अभ्यास करें और बेल के ६ पत्ते व २-४ काली मिर्च हनुमानजी का स्मरण करते हुए चबाकर खायें। इनको पानी के साथ पीसकर भी खा सकते हैं।

✻ यादशक्ति बढ़ाने, मन की दुर्बलता मिटाने तथा शरीर में शक्ति बढ़ाने के लिए ४-५ काजू शहद के साथ खूब चबा के प्रतिदिन खाने चाहिए। बच्चों को २ से ४ काजू खाने चाहिए।

✻ ताड़ासन करने से प्राण ऊपर के केन्द्रों में चले जाते हैं, इससे स्वप्नदोष, वीर्य-विकार, धातुक्षय जैसी बीमारियों में लाभ होता है। कद-वृद्धि में मदद मिलती है।

विधि : आसन पर सीधे खड़े होकर हाथ ऊँचे उठा के पंजों के बल पर खड़े रहें एवं दृष्टि ऊपर की ओर रखें। यह आसन दिन में २-३ बार ५-१० मिनट तक कर सकते हैं।

✻ क्रोधी स्वभाव पर नियंत्रण पाने, निर्णयशक्ति बढ़ाने तथा आज्ञाचक्र के विकास में शशकासन बहुत लाभदायी है। वज्रासन में बैठ के सिर को जमीन पर लगायें और हाथों को नमस्कार की स्थिति में जोड़ दें।

पूज्य बापूजी की
स्वास्थ्य की अनुपम युक्तियाँ

बच्चों को पढ़ा हुआ याद नहीं रहता है तो प्रतिदिन सूर्य को अर्घ्य दें, ५-७ तुलसी के पत्ते खाकर आधा गिलास पानी पियें, जीभ तालू में लगा के पढ़ें, कमर सीधी रख के बैठें, बुद्धि व मेधाशक्तिवर्धक प्रयोग आदि करें ।

कैंसर के रोगी को १० ग्राम तुलसी का रस तथा १० ग्राम शहद मिलाकर सुबह-दोपहर-शाम देने से अथवा १० ग्राम तुलसी का रस एवं ५० ग्राम ताजा दही (खट्टा नहीं) देने से उसे राहत मिलती है । एक-एक घंटे के अंतर से दो-दो तुलसी के पत्ते भी मुँह में रखकर चूसते रहें।

सुबह-दोपहर-शाम दही व तुलसी का रस कैंसर मिटा देता है (सूर्यास्त के बाद दही नहीं खाना चाहिए) । 'वज्र रसायन' की आधी गोली दिन में २ बार लें । नींबू के छिलके चाकू से निकाल के उनके छोटे-छोटे टुकड़े कर लें। अथवा नींबू को फ्रीजर में रखें और सख्त हो जाने पर उसके छिलके को कद्दूकश कर लें । उन टुकड़ों या कद्दूकश किये छिलकों को दाल, सब्जी, सलाद, सूप आदि खाद्य पदार्थों में मिला के नियमित सेवन करने से कैंसर रोग में

लाभ होता है। १ दिन के लिए १ नींबू का छिलका पर्याप्त है।

✻ एक चुटकी दालचीनी के चूर्ण को एक कप दूध में समभाग पानी मिलाकर तब तक उबालें, जब तक पानी वाष्पीभूत न हो जाय। फिर मिश्री मिलाकर पी लें, इससे हृदयाघात (हार्ट-अटैक) से सुरक्षा होगी और नाड़ियों के अवरोध (ब्लॉकेज) भी खुल जायेंगे।

✻ १० मिनट विधिवत् शवासन करने से या जीभ के अग्रभाग को दाँतों से थोड़ा दबाकर १० मिनट तक ज्ञान मुद्रा लगा के बैठने से शारीरिक-मानसिक तनाव व अनिद्रा आदि की बीमारी दूर होती है।

✻ बच्चों को पढ़ा हुआ याद नहीं रहता है तो प्रतिदिन सूर्य को अर्घ्य दें, ५-७ तुलसी के पत्ते खाकर आधा गिलास पानी पियें, जीभ तालू में लगा के पढ़ें, कमर सीधी रख के बैठें, बुद्धि व मेधाशक्तिवर्धक प्रयोग आदि करें।

✻ व्यवस्थित सुखासन में (पलथी मार के) बैठकर ही भोजन करना चाहिए। खड़े हो के भोजन करना व पानी पीना हानिकारक है। बैठकर और चुस्की लेते हुए पानी पियें।

✻ धूप में नंगे सिर नहीं टहलना चाहिए। इससे आँख, नाक, कान व ज्ञानतंतुओं (स्मरणशक्ति) आदि की कार्यक्षमता को बहुत नुकसान होता है।

✻ रात को सिर पूर्व या दक्षिण की तरफ करके ही सोना चाहिए अन्यथा सिरदर्द, तनाव, चिंता पीछा नहीं छोड़ेंगे।

✻ घर में लड़ाई-झगड़े ज्यादा होते हों तो 'हे प्रभु ! आनंददाता...' प्रार्थना पूरे परिवारसहित एक साथ बैठकर करें। (देखें आश्रम की पुस्तक 'हम भारत के लाल हैं', पृष्ठ ५७)

✻ एकादशी के दिन भूलकर भी चावल नहीं खायें, न किसीको खिलायें, अन्न भी नहीं खायें, न खिलायें। फल, दूध या छाछ, नींबू-शिकंजी पी सकते हैं। उपवास में उपयोग की जानेवाली सब्जियाँ ले सकते हैं।

✻ सिर पर बाजारू शैम्पू-साबुन लगाने से ज्ञानतंतु कमजोर होते हैं। बालों की जड़ें भी कमजोर होती हैं व बाल झड़ते हैं। आँवले का रस लगाने से बालों की जड़ें मजबूत होती हैं एवं उनका झड़ना बंद हो जाता है। मुलतानी मिट्टी या सप्तधान्य उबटन से स्नान साबुन व शैम्पू से १०० गुना हितकारी है। (मुलतानी मिट्टी व सप्तधान्य उबटन सभी आश्रमों एवं सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध हैं।)

पॉक्सो एक्ट के केस में भी मिलती है जमानत

नवम्बर २०१४ में नागपुर में १४ वर्षीय नाबालिग से दुष्कर्म करने के आरोप में पॉक्सो एक्ट के तहत गिरफ्तार किये गये डॉ. पचौरी को न्यायालय द्वारा जमानत दी गयी। इस प्रकरण में प्रथम दृष्ट्या सबूत डॉ. पचौरी के खिलाफ पाये गये थे। जब आरोपी के खिलाफ सबूत पाये जाने के बावजूद भी पॉक्सो एक्ट के केस में जमानत दी जा सकती है तो पूज्य बापूजी, जिनके केस में लड़की की मेडिकल जाँच रिपोर्ट एवं जाँच करनेवाली डॉ. शैलजा वर्मा का बयान - दुष्कर्म नहीं होने के पुख्ता सबूत हैं, उनको जमानत मिलनी चाहिए ऐसी जनता में माँग हो रही है। (श्री रू.भ. ठाकुर)

नेपाल भूकम्प-पीड़ितों के लिए
पूज्य बापूजी ने भिजवायी राहत-सामग्री

नेपाल में आये विनाशकारी भूकम्प से भारी जानमाल की तबाही हुई। यह सुनकर करुणासिंधु पूज्य बापूजी को बहुत पीड़ा हुई और तुरंत पूज्यश्री ने आज्ञा की : ''सेवाधारी तत्परता व जोर-शोर से राहत-सेवाकार्य में लग जायें। लोगों की सेवा में किसी प्रकार की कमी न रहने दें।'' पूज्यश्री के सेवाभावी साधक बड़ी तत्परता से राहत-सेवा में लग गये। रात को भूकम्प के भयंकर झटके व बारिश भी उन्हें डिगा नहीं पायी। आश्रम द्वारा कपड़े, कच्चा राशन, सब्जियाँ, बिस्कुट, नमकीन, पानी की बोतलें व पाउच, टेंट (अस्थायी निवास हेतु तम्बू), बर्तन आदि राहत-सामग्री से भरे ट्रकों के साथ दवाइयाँ तथा सेवाधारियों के दल भी भेजे गये।

भूकम्प-पीड़ित इलाकों में कई स्थान ऐसे हैं जहाँ आसानी से नहीं पहुँचा जा सकता है। उन पहाड़ियों के ऊपर बसे गाँवों में पूरे मकान ध्वस्त हो चुके हैं। वहाँ भी साधकों ने पहुँचकर राहत-सामग्री पहुँचायी। काठमांडू से २५ कि.मी. दूर धर्मस्थली-महाकाल में भी राहत-सामग्री पहुँचायी गयी। सबसे ज्यादा क्षतिग्रस्त सिंधुपाल चौक जिले के भीमटार, पीपलटार क्षेत्र में राहतकार्य चालू हैं। भूकम्प से ज्यादा प्रभावित अन्य इलाके आमटार, सिपापोखरी, धोतर आदि में आश्रम द्वारा अन्नक्षेत्र चलाये जा रहे हैं, जिनमें हजारों लोग भोजन कर रहे हैं। इन इलाकों में हजारों परिवारों को रहने हेतु

तिरपाल बाँटे गये। बच्चों को स्कूल बैग एवं ठंडा पानी रखने की बोतलें (थर्मस) व अन्य आवश्यक वस्तुएँ बाँटी गयीं। इस विषम परिस्थिति में वहाँ के लोग हताश-निराश हो गये हैं। ऐसे में बापूजी द्वारा बतायी गयी अनोखी युक्ति - सर्वदुःखहारी, प्राणबल भरनेवाला भगवन्नाम-जप व संकीर्तन कराया जा रहा है। बच्चों को एकत्रित करके 'बाल संस्कार केन्द्र' चलाया जा रहा है। कीर्तनयात्रा और प्रभातफेरियाँ भी निकाली जाती हैं। आपदाग्रस्त लोगों को धैर्य, साहस एवं ईश्वर-विश्वास बनाये रखने की प्रेरणा एवं सांत्वना दी जा रही है।

नेपाल में दूसरी बार आये भूकम्प के झटकों से क्षतिग्रस्त इलाकों में भी पूज्य बापूजी ने राहत-सामग्री भिजवायी तथा मीडिया कर्मियों से बातचीत के दौरान १४ मई को कहा : ''मैं तो चाहता हूँ केवल दो दिन के लिए नेपाल चला जाऊँ नेपालवालों की सेवा करने के लिए।'' दोलखा से ४० कि.मी. दूर सुनखानी नामक गाँव में भी (चाइना बॉर्डर के पास) राहतकार्य चालू हैं। जिनके घर गिर गये हैं उन्हें भी आश्रम की तरफ से वाटरप्रूफ टेंट के अस्थायी घर बनाकर दिये जा रहे हैं।

तिरपाल वितरण

कपड़े, कच्चा राशन, टेंट (अस्थायी निवास हेतु तम्बू), बर्तन आदि राहत-सामग्री का वितरण

मेडिकल कैम्प

सर्वशान्तियात्रा

बाल संस्कार केन्द्र

अन्नक्षेत्र

आरती में कपूर का उपयोग

कपूर-दहन में बाह्य वातावरण को शुद्ध करने की अद्भुत क्षमता है। इसमें जीवाणुओं, विषाणुओं तथा सूक्ष्मतर हानिकारक जीवाणुओं को नष्ट करने की शक्ति है। घर में नित्य कपूर जलाने से घर का वातावरण शुद्ध रहता है, शरीर पर बीमारियों का आक्रमण आसानी से नहीं होता, दुःस्वप्न नहीं आते और देवदोष तथा पितृदोषों का शमन होता है।

यह हमारे संविधान के विपरीत है

- सुप्रसिद्ध न्यायविद् डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी

सारी चीजों को देखने से मुझे लगता है कि आशारामजी बापू के खिलाफ केस बनता ही नहीं है, इनको निर्दोष बरी करना ही पड़ेगा । दंडित होने के बावजूद कइयों को जमानत मिली है तो (निर्दोष) बापूजी को क्यों नहीं ? उनके साथ बहुत बड़ा अन्याय हो रहा है । जाँच की स्थिती में होते हुए भी आशारामजी बापू करीब २१ महीने से जेल में हैं । यह भारत में एक रिकॉर्ड है ।

क्रिमिनल लॉ में इस तरह का प्रावधान नहीं है कि अपराध एक जगह हो और उसकी एफआईआर दूसरी जगह हो। पर दिल्ली पुलिस ने जीरो एफआईआर के आधार पर मेडिकल कराया । मेडिकल रिपोर्ट में साफ लिखा है कि लड़की के शरीर पर कोई खरोंच तक नहीं थी, बलात्कार का कोई संकेत नहीं था, नाखून तक की खरोंच नहीं थी। इस रिपोर्ट को देखने के बाद मुझे आश्चर्य हुआ कि आशारामजी बापू बिना जमानत के २१ महीने से कैसे जेल के अंदर हैं ? क्योंकि सर्वोच्च न्यायालय के अनेक निर्णयों के अनुसार यह स्पष्ट है कि जेल अपवाद होता है और बेल अनिवार्य होती है।

इस पूरे मामले को देखने के बाद लगा कि कोई इसके पीछे है । धर्मांतरणवालों ने गुजरात के आदिवासी बहुल इलाकों में पैसे देकर धर्मपरिवर्तन कराया था,आशारामजी बापू उन्हें वापस ला रहे थे । उस नाराजगी के कारण धर्मांतरण लॉबी ने ऐसा किया। बापूजी जैसे संत को २१ महीने तक बिना बेल के जेल में रखना, यह हमारे संविधान के विपरीत है । (संदर्भ : आईबीएन७, खास खबर, हिन्दू जनजागृति समिति की वेबसाइट से)

यह सुनियोजित साजिश है

- पूज्य बापूजी

धर्मांतरणवालों ने पैसे देकर स्वामी विवेकानंद को, स्वामी रामतीर्थ को, ऋषि दयानंद को खूब बदनाम किया। बड़े-बड़े लोग जिनकी चरण-रज लेकर अपना भाग्य बनाते थे, ऐसे संतों को बदनाम किया। क्योंकि संत तो हिन्दू धर्म का प्रचार करते हैं और इनको हिन्दू धर्म की जड़ें काटनी हैं।

नरसिंह मेहता हो गये सौराष्ट्र में। इतने पवित्र संत... बाप-रे-बाप ! उनका भी खूब गंदी तरह से कुप्रचार किया गया।

हिन्दुओं को विदेशी ताकतें भ्रमित करती हैं। 'फूट डालो और शासन करो' की नीति अपनाती हैं। उनको सजग करनेवाले बापू हैं। तो फिर बापू को क्यों छोड़ें ? बापू के लिए पैसे देकर पिछले ७ साल से क्या-क्या दुष्प्रचार कराते रहे... तांत्रिक किया, यह किया, फलाना किया... लेकिन मैं तो चींटी की भी रक्षा करके आनंदित होता हूँ, चींटी को भी आटा डालता हूँ तो बच्चों की बलि क्यों दूँगा ?

ऐसा-ऐसा कुप्रचार किया कि मानो बापू कोई इतने भयंकर क्रूर-हृदय हैं। इतने सारे आरोप लगवाये आज कुछ, कल कुछ... किसीको लाखों रुपये दे के कुछ बकवाया, किसीको कुछ...

अब यह मुझ पर नया झूठा आरोप लगवाया है। ऐसा गंदा कानून बन गया है। अब हमारे जैसे को भी घसीट सकते हैं तो दूसरों की क्या बात है ! झूठे केस में हाथ हमारे जैसों तक भी पहुँच जाते हैं। मेरे पर हुआ तो ऐसा कइयों पर होता होगा। मैं यह बात मानता हूँ कि बदनामी चाहे कितनी भी हो पर अपनी तरफ से बुरा कार्य न हो।

हम तो चाहेंगे भगवान उनको सद्बुद्धि दें। प्रह्लाद को सतानेवाले, संत तुकारामजी को सतानेवाले, भक्तों को सतानेवाले कौन-से नरक में हैं, मुझे पता नहीं परंतु वे संत तो करोड़ों हृदयों में अभी भी हैं। भगवान करें भारत देश को नीचा दिखाने की हरकतें करनेवाले बाज आयें। 'फूट डालो और शासन करो' की नीति अब नहीं चले। भारत आजाद हुआ है। भारत विश्वगुरु बनेगा तब तक संतों का और समाज का आंतरिक शुभ संकल्प रहेगा।

पूज्य बापूजी के सत्संग-सान्निध्य से लाभान्वित देश के वरिष्ठ राजनेता व संगठन प्रमुख

भारतरत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी
पूर्व प्रधानमंत्री

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
तत्कालीन मुख्यमंत्री, गुज.

श्री चन्द्रशेखर
पूर्व प्रधानमंत्री

श्री गुलजारीलाल नंदा
पूर्व प्रधानमंत्री

श्री एच.डी. देवेगौड़ा
पूर्व प्रधानमंत्री

श्री राजनाथ सिंह
केन्द्रीय गृहमंत्री

श्री नितिन गडकरी
केन्द्रीय सड़क परिवहन मंत्री

सुश्री उमा भारती
केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री

श्री बंडारू दत्तात्रेय, केन्द्रीय रोजगार मंत्री

श्रीमती आनंदी बहन पटेल
मुख्यमंत्री, तत्कालीन शिक्षामंत्री, गुज.

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश

डॉ. रमन सिंह
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया
मुख्यमंत्री, राजस्थान

प्रकाश सिंह बादल
मुख्यमंत्री, पंजाब

श्री अशोक सिंहलजी
मुख्य संरक्षक, विहिप

श्री मोहन भागवत
सरसंघचालक, रा.स्व.संघ

श्री प्रवीण तोगड़िया
अंतर्राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष, विहिप

श्री लालकृष्ण आडवाणी
पूर्व उपप्रधानमंत्री

श्री उद्धव ठाकरे
शिवसेना प्रमुख

''संत आशारामजी बापू के खिलाफ राजनैतिक साजिश हो रही है। प्रारम्भ से ही वे एक राजनैतिक पार्टी के निशाने पर हैं।''

- डॉ. रमन सिंह, मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

''किसीके भी ऊपर रेप का आरोप लगाना आसान है। तथाकथित घटना बताते हैं जोधपुर (राज.) की और ५ दिन तक लड़की दिल्ली में रही, कहाँ-कहाँ रही, किसीको नहीं पता। उसके बाद दिल्ली में रिपोर्ट लिखवायी, राजस्थान में क्यों नहीं ? संत आशारामजी बापू के खिलाफ यह साजिश है।''

- श्री कैलाश विजयवर्गीय, आवास, नगरीय प्रशासन एवं पर्यावरण मंत्री (म.प्र.)

''संत आशारामजी बापू निर्दोष हैं, संत उनके साथ हैं।''

- साध्वी उमा भारती, केन्द्रीय जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा पुनरुद्धार मंत्री

विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों में जीवन का सर्वांगीण विकास करने के गुर सीखते देश के भावी कर्णधार

अहमदाबाद

सूरत

अमरावती (महा.)

नासिक

प्रकाशा (महा.)

सम्बलपुर (ओड़िशा)

अमलनेर, जि. जलगाँव (महा.)

खीमराणा, जि. जामनगर (गुज.)

पटियाला (पंजाब)

भावनगर (गुज.)

बड़ौदा

सरोरा, जि. जम्मू

आश्रम, समितियाँ एवं साधक परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों व अखाड़ों के संतों-धर्माचार्यों तथा संगठन प्रमुखों व सुप्रसिद्ध हस्तियों ने किया पूज्य बापूजी की निर्दोषता का समर्थन व रिहाई की माँग

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2015-17
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2017
LWPP No. CPMG/GJ/45/2015
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 31-12-2017)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

शंकराचार्य श्री निश्चलानंदजी | जगद्गुरु श्री पंचानंद गिरिजी | श्री देवेन्द्रानंदजी | श्री नित्यानंदजी | शंकराचार्य स्वामी नरेन्द्रानंद सरस्वतीजी | श्री केशवानंदजी | पू. जयंत आठवलेजी | श्री रामानंदजी

बाबा हरपालसिंहजी | श्री विश्वेश्वरानंदजी | श्री शांतिगिरिजी | आचार्य बालकृष्णजी | श्री योगानंदजी | श्री कृपारामजी | श्री दिनेश भारतीजी | श्री बोरिया बाबाजी

श्री भास्करगिरिजी | श्री स्वात्मबोधानंदजी | श्री रामानंददासजी | श्री देविन्दरसिंहजी | श्री आदित्यनाथजी | साध्वी रामप्रिया | साध्वी कात्यायनी | साध्वी सरस्वती

बाबा दाताशाहजी | श्री प्रेमानंदजी | श्री रामबालकदासजी | श्री परमात्मानंदजी | श्री रामचैतन्यजी | श्री अरविंदजी | साँईं लीलारामजी | श्री मार्ग्यस्मितजी

श्री खगेन्द्रजी | बाबा रामचैतन्यजी | श्री राजेन्द्रदासजी | श्री आनंदजी | श्री उद्धवजी | श्री अखिलेश तिवारीजी | श्री आंधले महाराज | श्री ब्रजमोहनदासजी

श्री सुरेश चव्हाणके | श्री सतपालसिंहजी | श्री मनिंदरजीत सिंह बिट्टा | डॉ. सुमन (पूर्व पादरी) | श्री नरेश पंडित | श्री रमेश शिंदे | इकरार खान | हाजी तैयब कुरैशीजी

प्रसिद्ध अभिनेता गोविंदा | फिरोज खान (किरदार-अर्जुन) | श्री मुकेश खन्ना (शक्तिमान व भीष्म पितामह) | श्री राजशेखरजी (जाम्बवंत) | श्री सुरेन्द्र पाल (द्रोणाचार्य व दक्ष प्रजापति) | उल्का गुप्ता (रानी लक्ष्मीबाई) | अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त जादूगर आँचल | श्रीमती रुपाली दुबे रिटायर्ड लेफ्टिनेंट ऑफिसर, इंडियन नेवी

स्थानाभाव के कारण सभी संतों-धर्माचार्यों, संगठन-प्रमुखों, हस्तियों आदि की तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं।